9

बचपन : कहते-कहते बनी कहानी*

क्षमा शर्मा

कहानी सुनना बच्चों को बहुत भाता है। कहानी सुनाते समय बच्चों को कहानी बनाने या कहानी आगे बढ़ाने के लिए कहा जाए तो बच्चे बहुत उत्साह से इसमें भाग लेते हैं। ऐसा करने से बच्चों की सृजनात्मकता को अवसर मिलता है, साथ ही उनके मनोभावों की जानकारी भी बड़ों को हो जाती है। बच्चों के मान की बात तो उनके साथ कहानी की दुनिया में रमकर ही जानी जा सकती है।

एक बार मेरे पिता जी कहानी सुना रहे थे। मैं चुपचाप सुन रही थी। तब उन्होंने कहा था कि यदि कहानी सुनते वक्त यों चुपचाप बैठी रहोगी, तो न तो कहानी सुनाने वाले को अच्छा लगेगा, न तुम्हें ही। कहानी तभी आगे बढ़ती है, जब सुनने वाला पूछता है। फिर... फिर क्या हुआ?

इस मामूली-सी बात ने जैसे मुझे आगे का रास्ता दिखाया। मैंने सोचा कि कहानी में पूछने वाले की भूमिका होनी चाहिए। बस नए सिरे से कहानी बननी शुरू हो गई। अब मैं जब भी बच्चों के बीच में जाती, मुझे न तो किसी कहानी को पढ़ने की ज़रूरत पड़ती न सुनाने की। बच्चों के बीच जाकर मैं वहाँ किसी भी चीज़ पर नज़र गड़ाती। कोई मेज़, पंखा, दीवार, पेड़, बस्ता, पेंसिल, छड़ी, कोई फूल, कोई पक्षी या कुछ भी।

मैं शुरू करती– एक बस्ता था। उसमें तरह-तरह की किताबें थीं। फिर बच्चों से पूछती– बस्ते में और क्या था? बच्चे हाथ उठा देते। इस तरह कहानी की यात्रा शुरू हो जाती। बस्ता कभी दौड़ते हुए सड़क पर पहुँचता, कभी पेड़ों पर लटकता, कभी टीचर से डाँट खाता। जिस बच्चे को बस्ता जैसा दीखता, कहानी उसी रफ़्तार से आगे बढ़ने लगती। सारे के सारे बच्चे उस कहानी के पीछे दौड़ने लगते। उनकी आँखों की चमक, उतावलापन, बार-बार हाथ उठाना, हँसना-खिलखिलाना सब उसी कहानी के विकास की ही नहीं बच्चों की दिलचस्पी की भी कथा कहते। कहानियों का आदि, मध्य, अंत बार-बार बदलते। जब मैं शुरू करती– एक घर था। उसमें एक खिड़की थी। जैसे ही मैं खिड़की कहती, उसमें से वे ही बच्चे झाँकने लगते, जो मेरे सामने बैठे होते।

इस तरह कहानी जिस तरह से आगे बढ़ती मुझे बच्चों के मन की, उनकी चिंताओं की, उनकी खुशियों, निराशाओं व पसंद-नापसंद की

* *लेख, हिंदुस्तान* गुरुवार 22 जनवरी 2009 से साभार

जानकारी मिलती। कभी-कभी मुझे लगता कि मैं आज के इन होशियार, टैक्नोसैवी बच्चों को कितना कम जानती हूँ। बच्चों के साथ कहानी की दुनिया में रमकर मैंने भी बहुत कुछ सीखा। एक घटना को इस तरह से देखने पर पता चला। हर बार एक ऐसी नई कहानी बनी, जो न किसी दूसरी कहानी से मिलती-जुलती थी, न किसी की नकल थी।

मैं हाल ही में गुड़गाँव के स्कूल में गई थी। उन्हीं दिनों दिल्ली में बम ब्लास्ट हुए थे। जिन बच्चों के बीच मैं गई थी, वे दूसरी और तीसरी कक्षा के बच्चे थे। मुझे यह देखकर हैरानी हुई कि उस दिन उन नन्हे बच्चों ने जो भी कहानियाँ बुनीं, उन सभी का अंत बम ब्लास्ट में हुआ था। वे हँसते थे, फिर भी आँखों में बम का डर कौंधता था। हिंसा का सामना कैसे करें, यह बात उनकी समझ से परे थी। हिंसा जितनी होती है, मीडिया के जरिए उससे हज़ार गुना सुरसा के मुँह की तरह फैलती-बढ़ती जाती है। हिंसा को बेचने वाले कभी यह क्यों नहीं समझते कि उनकी टीआरपी बढ़ रही है, मगर वे देखने वालों, पढ़ने वालों में कितनी असुरक्षा भर रहे हैं।

हम चाहे जितनी अच्छी कहानी अपने बच्चों को सुनाएँ, उन्हें लिखना सिखाएँ मगर एक ऐसी दुनिया जहाँ नफ़रत का बोलबाला है, जहाँ हरेक एक-दूसरे को नोंचने-खसोटने को आतुर हो, ऐसे में बच्चे अपनी उम्र से कई गुना बड़े कैसे नहीं होंगे?

हम बच्चों को कैसी दुनिया दे रहे हैं, यह हमें सोचना है। नफ़रत, हिंसा, मारामारी या कि एक-दूसरे से मिलकर हाथ में हाथ डालकर चलना। जब ऐसा हो, तभी कोई कहानी बेहद खूबसूरत, पॉजिटिव और एक ऐसी नई इबारत हो सकती है, जिसे सचमुच बच्चों के मन पर लिखा जा सकता है।

अमेरिका में इतिहास बनाने वाले नवनिर्वाचित राष्ट्रपति बराक ओबामा ने चुनाव जीतने के बाद अपने भाषण में बार-बार कहा-*यस वी कैन*। मैं भी कहूँगी– हाँ हम कर सकते हैं। हम अपने बच्चों के मन पर नई कहानी की इबारत भी लिख सकते हैं। एक अच्छी कहानी जो किसी भी तरह के अन्याय, हिंसा, गैरबराबरी और शोषण के विरुद्ध होगी। एक ऐसी दुनिया जिसमें आँसू नहीं खिलखिलाहटों की बरसात होगी।

❑❑❑